



Microfinance Institutions Network (MFIN)

Fincare SFB case study

Coverage Report

October 2019

Media Coverage Index

S. No.	Publication Name	Media
1.	Pioneer	Print
2.	Hindustan Express	Print
3.	Virat Vaibhav	Print
4	Uday Bhaskar	Print
5.	Action India	Print
6.	Globaltoday	Print
7.	Satyajai Times	Print
8.	Sher E Haryana	Print

Publication	Pioneer
Edition	Haryana
Date	19 th October, 2019
Page No.	05

हरियाणा के लोगों की जिंदगियां बदलने में मदद कर रहा है फिनकेयर एसएफबी

पायनियर समाचार सेवा। तिगांव

श्रीमती दिशा घोड़े हरियाणा के एक छोटे से गांव तिगांव में रहती हैं। उनकी कहानी जीवन में गरीबी से उठकर अपने घर के साथ-साथ पूरे गांव में एक प्रतिष्ठित महिला बनने का सफर दिखाती है।

करीब तीन-चार वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटीशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। उन्होंने अपनी सहेलियों और रिश्तेदारों से भी आर्थिक मदद मांगने की कोशिश की, लेकिन कोई भी उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था। हर प्रकार की निराशा के बावजूद वो हार मानने

को राजी नहीं थी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यानि ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ऋण की किश्तें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। इस मुलाकात के बाद दिशा भी फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक के स्वयं सहायता समूह की सदस्य बन गई। शुरुआत में उन्होंने ऋण 20,000 का ऋण लिया, जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पार्लर के

लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें ऋण 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमा सकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ऋण चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से ऋण 30,000 का एक दूसरा ऋण लिया, जिससे उन्होंने चार सिलाई मशीन और खरीद ली। इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगी।

अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर ऋण 25,000 से 26000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। अब दिशा अपने समाज में एक प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत कर रही हैं और अपने बच्चों को निजी स्कूल में भी पढ़ा रही हैं। जीवन में इस बदलाव के लिए वो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक का आभार मानती है।

Publication	Hindustan Express
Edition	Faridabad
Date	20 th October, 2019
Page No.	06

लोगों की जिंदगियां बदलने में मदद कर रहा है फिनकेयर एसएफबी

फरीदाबाद। जिले के गांव तिगांव में वाली श्रीमती दिशा घोड़े की कहानी जीवन में गरीबी से उठकर अपने घर के साथ-साथ पूरे गांव में एक प्रतिष्ठित महिला बनने का सफर दिखाती है। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटीशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। उन्होंने अपनी सहेलियों और रिश्तेदारों से भी आर्थिक मदद मांगने की कोशिश की लेकिन कोई भी उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था। हर प्रकार की निराशा के बावजूद वो हार मानने की राजी नहीं थी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की



आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिलीं जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यात्रा में शामिल होकर अपने परिवार की किरतें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की

जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। इस मुलाकात के बाद दिशा भी फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक के स्वयं सहायता समूह की सदस्य बन गईं। शुरुआत में उन्होंने 20,000 का ऋण लिया, जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पार्लर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें रु 8000 प्रति

महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमा सकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ऋण चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से रु 30,000 का एक दूसरा ऋण लिया जिससे उन्होंने 4 सिलाई मशीन और खरीद ली। इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगीं। अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर रु 25,000 व 26000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। अब दिशा अपने समाज में एक प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत कर रही हैं और अपने बच्चों को निजी स्कूल में भी पढ़ा रही हैं। जीवन में इस बदलाव के लिए वो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक का आभार मानती हैं, जिसने जरूरत के वक़्त पर उनकी जैसी कई सारी महिलाओं का साथ दिया है।

Publication	Virat Vaibhav
Edition	Delhi NCR
Date	20 th October, 2019
Page No.	10

लोगों की जिंदगियां बदलने में मदद कर रहा है फिनकेयर एसएफबी

तैभव न्यूज़ ■ फरीदाबाद



जिले के गांव तिगांव में वाली श्रीमती दिशा घोड़े की कहानी जीवन में गरीबी से उठकर अपने घर के साथ-साथ पूरे गांव में एक प्रतिष्ठित महिला बनने का सफर दिखाती है। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटिशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। उन्होंने अपनी सहेलियों और रिश्तेदारों से भी आर्थिक मदद मांगने की कोशिश की लेकिन कोई भी उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था। हर प्रकार की निराशा के बावजूद वो हार मानने को राजी नहीं थी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यानि ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ऋण की किश्तें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की

जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। इस मुलाकात के बाद दिशा भी फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक के स्वयं सहायता समूह की सदस्य बन गई। शुरुआत में उन्होंने 20,000 का ऋण लिया, जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पालर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें रु 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमा सकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ऋण चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से रु 30,000 का एक दूसरा ऋण लिया जिससे उन्होंने 4 सिलाई मशीन और खरीद ली।

इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगी। अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर रु 25,000 व 26000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। अब दिशा अपने समाज में एक प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत कर रही हैं और अपने बच्चों को निजी स्कूल में भी पढ़ा रही हैं।

Publication	Uday Bhaskar
Edition	Faridabad
Date	20 th October, 2019
Page No.	08

लोगों की ज़िंदगियां बदलने में मदद कर रहा है फिनकेयर एसएफबी



उदय भास्कर/संवाददाता

फरीदाबाद। जिले के गांव तिगांव में वाली श्रीमती दिशा घोड़े की कहानी जीवन में गरीबी से उठकर अपने घर के साथ-साथ पूरे गांव में एक प्रतिष्ठित महिला बनने का सफर दिखाती है। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटिशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। उन्होंने अपनी सहिलियों और रिश्तेदारों से भी आर्थिक मदद मांगने की कोशिश की लेकिन कोई भी उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था। हर प्रकार की निराशा के बावजूद वो हार मानने को राजी नहीं थी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यानि ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ऋण की किरतें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की

जिम्मेदारियों और सुविधा की जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। इस मुलाकात के बाद दिशा भी फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक के स्वयं सहायता समूह की सदस्य बन गई। शुरुआत में उन्होंने 20,000 का ऋण लिया, जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पालर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें रु 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमा सकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ऋण चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से रु 30,000 का एक दूसरा ऋण लिया जिससे उन्होंने 4 सिलाई मशीन और खरीद ली। इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगी। अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर रु 25,000 व 26000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। अब दिशा अपने समाज में एक प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत कर रही हैं और अपने बच्चों को निजी स्कूल में भी पढ़ा रही हैं। जीवन में इस बदलाव के लिए वो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक का आभार मानती हैं, जिसने ज़रूरत के वक्त पर उनकी जैसी कई सारी महिलाओं का साथ दिया है।

Publication	Action India
Edition	Haryana
Date	20 th October, 2019
Page No.	03

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में फिनकेयर मददगार

फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की शुरुआत जून 2017 में हुई थी, जो पहले दिशा माइक्रोफिन लिमिटेड नामक एनबीएफसी-एमएफआई कंपनी के रूप में जानी जाती थी। दिशा माइक्रोफिन सितंबर 2015 में आरबीआई से इन प्रिंसिपल स्वीकृति प्राप्त करने वाली 10 कंपनियों में से एक थी। यह अनुमति देश में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए चुनिंदा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और माइक्रो फाइनेंस कंपनियों को स्मॉल फाइनेंस बैंक शुरू करने के लिए दी जाती है। दिशा छोटे हरियाणा के एक छोटे से गांव तिगांव में रहती हैं। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटिशियन और सिलाई-

निलंबन रद्द

ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है

कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसे की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं

के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक या नि ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ऋण की किश्तें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। शुरुआत में उन्होंने रु 20,000 का ऋण लिया जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पार्लर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें रु 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी।

Publication	Global Today
Edition	Tigaon
Date	20 th October, 2019
Page No.	06

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मददगार फिनकेयर

तिगांव। फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की शुरुआत जून 2017 में हुई थी, जो पहले दिशा माइक्रोफिन लिमिटेड नामक एनबीएफसी-एमएफआई कंपनी के रूप में जानी जाती थी। दिशा माइक्रोफिन सितंबर 2015 में आरबीआई से इन प्रिंसिपल स्वीकृति प्राप्त करने वाली 10 कंपनियों में से एक थी। यह अनुमति देश में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए चुनिंदा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और माइक्रो फाइनेंस कंपनियों को स्मॉल फाइनेंस बैंक शुरू करने के लिए दी जाती है। श्रीमती दिशा घोड़े हरियाणा के एक छोटे से गांव तिगांव में रहती हैं। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटिशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यानि

ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ऋण की किश्तें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। शुरुआत में उन्होंने ₹ 20,000 का ऋण लिया जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पार्लर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें ₹ 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमा सकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ऋण चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से ₹ 30,000 का एक दूसरा ऋण लिया, जिससे उन्होंने 4 सिलाई मशीन और खरीद ली। इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगी। अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर ₹ 25,000 -26,000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। जीवन में इस बदलाव के लिए वो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक का आभार मानती हैं, जिसने ज़रूरत के वक्त पर उनकी जैसी कई सारी महिलाओं का साथ दिया है।

Publication	Satyajai Times
Edition	Haryana
Date	19 th October, 2019
Page No.	05

हरियाणाके लोगों की जिंदगियां बदलने में मदद कर रहा है फिनकेयर एसएफबी

तिगांव, 18 अक्टूबर, सत्यजय टाईम्स। श्रीमती दिशा घोड़े हरियाणा के एक छोटे से गांव तिगांव में रहती हैं। उनकी कहानी जीवनमें गरीबी से उठकर अपने घर के साथ-साथ पूरे गांव में एक प्रतिष्ठित महिला बनने का सफर दिखाती है। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल व्यूटिशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में कोई मदद नहीं करपा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। उन्होंने अपनी सहेलियों और रिश्तेदारों से भी आर्थिक मदद मांगने की कोशिश की लेकिन कोई भी उनकी सहायता करने को तैयार नहीं था। हर प्रकार की निराशा के बावजूद

वो हार मानने को राजी नहीं थी और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉलफाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यानि ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ग्रुप की किरतें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ग्रुप अधिकारी ने दिशा को बैंकके समूह ग्रुप के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की जानकारी भी दी। ग्रुप अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिकस्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। इस मुलाकात के बाद दिशा भी फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक के सदस्य सहायता समूह में शामिल हो गईं।

शुरुआत में उन्होंने रु 20,000 का ग्रुप लिया जिससे सिलाई मशीन और व्यूटी पालर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें रु 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमासकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्म विश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ग्रुप चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से रु 30,000 का एक दूसरा ग्रुप लिया जिससे उन्होंने 4 सिलाई मशीन और खरीद ली। इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगीं। अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर रु 25,000 रु 26,000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। अब दिशा अपने समाज में एक प्रतिष्ठित जीवन व्यतीत कर रही हैं और अपने

बच्चों को निजी स्कूल में भी पढ़ा रही हैं। जीवन में इस बदलाव के लिए वो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक का आभार मानती हैं जिसने जरूरत के वक्त पर उनकी जैसी कई सारी महिलाओं का साथ दिया है। फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की शुरुआत जून 2017 में हुई थी जो पहले दिशा माइक्रोफिन लिमिटेड नामक एनबीएफसी, एमएफआई कंपनी के रूप में जानी जाती थी। दिशा माइक्रोफिन सितंबर 2015 में आरबीआई से इन प्रिंसिपल स्वीकृति प्राप्त करने वाली 10 कंपनियों में से एक थी। यह अनुमति देश में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए चुनिंदा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और माइक्रो फाइनेंस कंपनियों को स्मॉल फाइनेंस बैंक शुरू करने के लिए दी जाती है। भारतीय माइक्रो फाइनेंस सेक्टर ने एक लंबा सफर तय किया है।

शुरुआती अनुमानों के अनुसार मार्च 2019 के अंत तक इस उद्योग सेक्टर ने 1 लाख से अधिक कर्मचारियों की मदद से 30 राज्यों में 50 मिलियन से अधिक ग्राहकों; जिनमें से 99% से अधिक महिलाएं हैं और अधिकांश के लिए यह उनके जीवन में पहली क्रेडिट सुविधा रही तक पहुंच कर लगभग 2,00,00,000 करोड़ रुपये के क्रेडिट पोर्टफोलियो के स्तर को छुआ है। 2011 के मय में आंध्र प्रदेश में एपीड संकट के बाद जो उद्योग लगभग खत्म हो चुका था उसके लिए यह एक बड़ी उपलब्धि है। देश का एकमात्र विनियमित वित्तीय संस्थान है जो कम आय वाले परिवारों को असुरक्षित ग्रुप प्रदान करता है। ये संस्थाएँ उन महिलाओं के लिए कर्ज को अनुपलब्धता को खत्म करती हैं जिनके पास ग्रुप के बदले

में गिरवी रखने के लिए कुछ भी नहीं है का उद्देश्य स्थायी आजीविका निर्माण करना है। दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राहकों को सभी प्रकार की वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हुए ये संस्थान सरकार के वित्तीय समावेशन को बढ़ावा दे रहे हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का एक महत्वपूर्ण भागीदार है और इस कार्यक्रम के तहत वितरित ग्रुपका लगभग 50% माइक्रोफाइनेंस कंपनियों के माध्यम से किया गया है। एनबीएफसी, एमएफआई भारतीय रिजर्व बैंक के तहत पंजीकृत हैं और ग्रुप के आकार से लेकर ग्रुप की अवधि व्याज की दर तक बेहद सख्ती के साथ विनियमित होते हैं। साथ ही फेयर प्रैक्टिस कोड; एफपीसीड और इंडस्ट्री कोड ऑफ कंडक्ट; सीओसीड इनके कामकाज को नियंत्रित करते हैं। रिजर्व बैंक सभी को नियमित निगरानी करता है।

Publication	Sher E Haryana
Edition	Faridabad
Date	19 th October, 2019
Page No.	04

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में मददगार फिनकेयर

तिगांव : फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की शुरुआत जून 2017 में हुई थी, जो पहले दिशा माइक्रोफिन लिमिटेड नामक एनबीएफ सी-एमएफ आई कंपनी के रूप में जानी जाती थी। दिशा माइक्रोफिन सितंबर 2015 में आरबीआई से इन प्रिंसिपल स्वीकृति प्राप्त करने वाली 10 कंपनियों में से एक थी। यह अनुमति देश में वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाने के लिए चुनिंदा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों और माइक्रो फाइनेंस कंपनियों को स्मॉल फाइनेंस बैंक शुरू करने के लिए दी जाती है। श्रीमती दिशा घोड़े हरियाणा के एक छोटे से गांव तिगांव में रहती हैं। करीब 3-4 वर्ष पहले तक दिशा के परिवार की आर्थिक स्थिति काफी अच्छी नहीं थी। एक कुशल ब्यूटिशियन और सिलाई-कढ़ाई में एक अनुभवी टीचर होने के बावजूद पैसों की कमी के कारण, दिशा अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने में

कोई मदद नहीं कर पा रही थी। उनके पति की मामूली आमदनी घर का खर्च चलाने के लिए पूरी नहीं पड़ती थी। प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक हालत सुधारने के फैसले पर अडिग रही। इसी बीच वो अपने पड़ोस में कुछ महिलाओं के एक समूह से मिली जो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक की एक समूह बैठक यानि ग्रुप मीटिंग के लिए अपने ऋण की किश्तें जमा करने आई थीं। वहां मौजूद फिनकेयर के ऋण अधिकारी ने दिशा को बैंक के समूह ऋण के बारे में बताया और साथ ही एक समूह की जिम्मेदारियों और सुविधा की जानकारी भी दी। ऋण अधिकारी ने दिशा को बताया कि यह बैंक उनके जैसे परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने में किस तरह से मदद कर सकती है। शुरुआत में उन्होंने रु 20,000

का ऋण लिया जिससे सिलाई मशीन और ब्यूटी पार्लर के लिए कुछ सामान खरीदा। इससे उन्हें रु 8000 प्रति महीने की कमाई होने लगी। खुद से कमा सकने की अपनी क्षमता देखकर उनका आत्मविश्वास भी बढ़ गया। इसलिए अपना पिछला ऋण चुकाने के बाद उन्होंने फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक से रु 30,000 का एक दूसरा ऋण लिया, जिससे उन्होंने 4 सिलाई मशीन और खरीद ली। इसके बाद वो आसपास की महिलाओं को सिलाई का काम सिखाने लगी। अपने सतत प्रयासों के चलते उनके परिवार की मासिक आमदनी बढ़कर रु 25,000 -26,000 हो गई जो कि उनकी पहले की आर्थिक हालत से काफी बेहतर थी। जीवन में इस बदलाव के लिए वो फिनकेयर स्मॉल फाइनेंस बैंक का आभार मानती हैं, जिसने ज़रूरत के वक्त पर उनकी जैसी कई सारी महिलाओं का साथ दिया है।